8

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के निहितार्थ

शशि रंजन*
सुहासिनी बाजपेयी शुक्ल**

शिक्षा स्कूल की इमारत या कक्षा की तुलना में कहीं अधिक व्यापक है। कक्षाओं को समाज के लोकतांत्रिक शिष्टाचार से अलग नहीं किया जा सकता है। वे लघु सामाजिक व्यवस्था है जहाँ विद्यार्थियों को अपने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंध का पता लगाना चाहिए। एक स्कूल जो आलोचनात्मक शिक्षण को लागू करता है जिसका प्रमुख उद्देश्य अपने विद्यार्थियों में स्वायत्तता, संवेदनशीलता और आलोचनात्मक सोच को विकसित करना होता है। इस शिक्षणशास्त्र का उद्देश्य यह देखना है कि कोई विद्यार्थी किसी अवधारणा को समझने और उसे वास्तविक जीवन की स्थितियों से जोड़ने में कितना सक्षम है। उत्पीड़क एवं उत्पीड़ितों के मध्य समानता एवं असमानता की खाई को पाटने के लिए आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को स्कूली वातावरण, कक्षा-कक्ष में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, स्कूल की संस्कृति एवं पाठ्यक्रम में आवश्यकतानुसार अपनाया जाना चाहिए। यह शिक्षणशास्त्र निरंतर प्रतिक्रिया, संवाद, समालोचना और परिवर्तन की अनुमति देता है। एक कक्षा लोकतांत्रिक तब होती है जब वहाँ उपस्थित सभी विद्यार्थियों को समस्या-समाधान करने वाले समुदाय के सदस्यों को समानरूप से अवसर प्रदान करती है। यह शिक्षणशास्त्र अन्य शिक्षणशास्त्रों की तरह केवल एक मूक दर्शक नहीं है। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्रियों का मानना है कि ज्ञान कभी भी हस्तांतरित नहीं किया जा सकता है वरन् ज्ञान हमेशा प्राप्य (Negotiable) और आंशिक होता है। बाहर की दुनिया में क्या होता है इसका कक्षा में क्या प्रभाव पड़ता है और कक्षा में हम जो कुछ भी (हम क्या पढ़ाते हैं, कैसे पढ़ाते हैं, हम किस सामग्री का उपयोग करते हैं, हम विद्यार्थियों का आकलन कैसे करते हैं, हम उन्हें कैसे प्रतिक्रिया देते हैं) करते हैं उसका व्यापक प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। प्रस्तुत लेख में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र एवं उसके शैक्षिक निहितार्थ के अंतर्गत स्कूलों की भूमिका, संवाद, लोकतांत्रिक वातावरण, बिंदुओं पर विश्लेषणात्मक एवं समीक्षात्मक वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

पाउलो रेगलस नेव्स फ्रेरे (*Paulo* Reglus Neves *Freire,* 19 सितंबर, 1921–2 मई, 1997) एक ब्राज़ीलियाई शिक्षक और दार्शनिक थे, जो आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के प्रमुख अधिवक्ता थे। उनके प्रभावशाली काम *पेडागॉजी ऑफ़ द ओप्रेस्ड* को आमतौर पर आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र आंदोलन के मूलभूत ग्रंथों में से एक माना जाता है जो अध्यापक, विद्यार्थी और समाज के बीच एक नए

* *पीएच.डी. शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442 001
** *सहायक आचार्या*, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442 001

संबंध के साथ एक नए शिक्षणशास्त्र का प्रस्ताव रखता है (व्यल्ली, 2012; बर्मानिया, 2011) जो सामाजिक विज्ञान में तीसरी सबसे अधिक उद्धृत पुस्तक थी (इलियट, 2016)। जिसका विस्तार बाद में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुआ और जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका में एक विशेष रूप से मज़बूत आधार प्रदान हुआ, जहाँ इनके समर्थकों ने नस्लवाद, लिंगवाद और उत्पीड़न से निपटने के लिए इस शिक्षणशास्त्र का उपयोग करने के साधन विकसित करने की माँग की। जैसे-जैसे यह बढ़ता गया, इसने मानवाधिकार आंदोलन, नागरिक अधिकार आंदोलन, विकलांगता अधिकार आंदोलन, स्वदेशी अधिकार आंदोलन, उत्तर आधुनिक सिद्धांत, नारीवादी सिद्धांत और उत्तर औपनिवेशिक सिद्धांत जैसे क्षेत्रों से तत्वों को शामिल किया। ब्राजील के शिक्षक पाउलो फ्रेरे आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के सैद्धांतिक संविधान में केंद्रीय व्यक्ति थे। उन्हें 1960 के दशक की शुरुआत में ब्राजील में साक्षरता के लिए एक नए शैक्षणिक दृष्टिकोण के कार्यान्वयन के लिए दुनिया भर में जाना जाने लगा जिसने 300 निरक्षर किसानों को 45 दिनों में लिखने और पढ़ने में सक्षम बनाया (ब्राउन, 1987)।

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच को बढ़ाने और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन उत्पन्न करने के लिए एक प्रभावी रणनीति है। यह एक ऐसी रणनीति है जो विद्यार्थियों में चेतना, समझ और निर्णय को बढ़ाती है। यह शिक्षणशास्त्र विद्यार्थियों को कक्षा में बोलने के लिए आवाज़ प्रदान करती है (उद्दीन, 2019)। फ्रेरे ने आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को शिक्षा के लिए एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया है जिसमें शिक्षार्थियों को उनकी सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से संलग्न होने के महत्व पर प्रकाश डाला गया है जो अपने विचार एवं स्थिति को खोजने और उन्हें विकसित करने में सक्षम है (उद्दीन, 2019; फ्रेरे, 2001)। फ्रेरे एक ऐसी शिक्षा के पक्ष में थे जो ब्राजील के लोगों की समस्याओं का समाधान खोजने में योगदान करेगी। हालाँकि, इन समाधानों को लोगों पर थोपा नहीं जाना था या उनके लिए खोजा नहीं गया था उन्हें लोगों के साथ खोजा जाना था। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा का प्रस्ताव दिया जो लोगों को स्वयं, उनकी ज़िम्मेदारियों और नयी सांस्कृतिक जलवायु में उनकी भूमिका को प्रतिबिंबित करने में सक्षम बनाए।

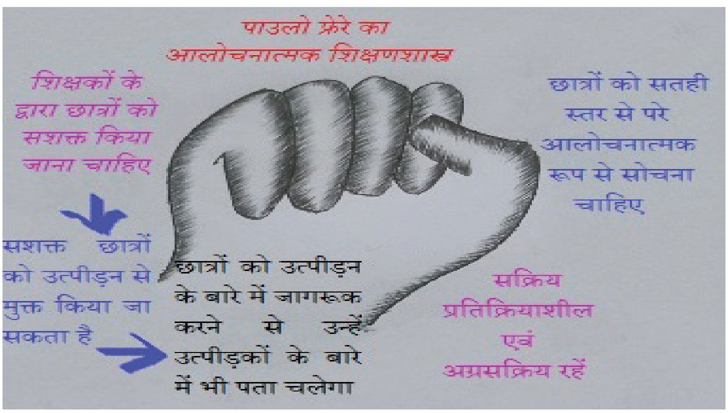

स्रोत— थ्योरी टूलबॉक्स– जूलिया पिक्चिओत्तिनो

इस तरह की शिक्षा से लोगों को अपनी समस्याओं के प्रति जिज्ञासु रवैया अपनाने में मदद मिलेगी। इस प्रकार एक प्रामाणिक लोकतंत्र की स्थापना और संचालन में योगदान होता है। फ्रेरे के शैक्षिक परिप्रेक्ष्य का उद्भव और निर्माण 1960 के दशक की शुरुआत में ब्राज़ील के सामाजिक और राजनीतिक संकट से जुड़ा हुआ है। सामाजिक समस्याओं के गहराने और उसका समाधान राजनीतिक नेतृत्वकर्ता के द्वारा न किए जाने के कारण ब्राज़ील के लोगों में तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं के प्रति कट्टरता उत्पन्न होने लगी। पाउलो फ्रेरे का मानना था कि उत्पीड़न के कारणों का सही बोध न होने के कारण उत्पीड़ित लोगों की लड़ाई आमूल चूल परिवर्तन के लिए न होकर तात्कालिक लाभों तक सिमट जाती है। परिवर्तन के आरंभिक दौर में उत्पीड़ित उत्पीड़क की नकल करता हुआ उसके जैसा बनना चाहता है। लोगों के लिए प्राथमिक राजनीतिक महत्व के मुद्दे के रूप में साक्षरता का उद्भव मूल तत्वों में से एक था। फ्रेरे का ध्यान मानवीयकरण में उनके विश्वास पर स्थापित सक्रिय लोगों की भागीदारी पर था जिन्हें इतिहास और संस्कृति के निर्माता के रूप में चित्रित किया (ग्रोल्लिओस, 2009)। मनुष्य का मानवीकरण शिक्षा के माध्यम से लोगों को शिक्षित करके उसे जागरूक कर, उत्पीड़न तथा उत्पीड़ित की समझ, आलोचनात्मक चेतना विकसित करके किया जाता है।

शिक्षा स्कूल की इमारत या कक्षा की तुलना में कहीं अधिक व्यापक है। यह जीवन के हर पहलू में विस्तार करता है और स्कूल के चहारदीवारी तक ही सीमित नहीं है वरन् बाहर की दुनिया से स्वतंत्र नहीं होता है। यह एक सार्वजनिक कार्य है और इसमें स्व, लोगों और स्थानों के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक और संस्कृति के पहलू शामिल हैं जो उन्हें परिभाषित करते हैं (ग्रिफ्फिन, 2017)। शिक्षा को वर्तमान सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों का जवाब देने और अनुकूल बनाने की आवश्यकता है। ब्रूकफील्ड (1995) ने कक्षाओं के सामाजिक यथार्थ को उजागर करते हुए कहा कि कक्षाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चिंतनशील जीवन की धारा से कटे हुए शांत भँवर नही हैं। कक्षाओं को समाज के लोकतांत्रिक शिष्टाचार से अलग नहीं किया जा सकता है। वे लघु सामाजिक व्यवस्था हैं जहाँ विद्यार्थियों को अपने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंध का पता लगाना चाहिए। भागीदारी और संवाद प्रक्रियाओं के माध्यम से सीखना, पुन:सीखना (re-learn) और सीखे हुए ज्ञान को भूलना (unlearn) होगा। कक्षाएँ इन मुद्दों को संबोधित करने और विद्यार्थियों को उनकी आलोचनात्मक चिंतन, तार्किक क्षमता और चुनौतियों की कहानियों को साझा करने की अनुमति देती हैं। कथाएँ बाहरी दुनिया को कक्षा में लाती हैं और विद्यार्थियों, अध्यापकों और शिक्षा प्रणाली को स्वयं के साथ प्रारंभ करने का आधार देती हैं (ग्रिफ्फिन, 2017)। किसी स्थान के सभी पहलुओं को समालोचनात्मक रूप से संबोधित करने का विचार आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र में निहित है, जो ज्ञान को सृजन करने की क्षमता, इच्छा और अनुभव के तरीकों पर ध्यान आकर्षित करता है, जो सीखने की विशिष्ट बुनियादी परिस्थितियों में उत्पन्न होते हैं (गिरौक्स, 2011)। आलोचनात्मक सिद्धांत और शिक्षणशास्त्र, मानक रूपों और कई अन्य रूपों के बीच शक्ति संबंधों को उजागर करने के लिए

एक उपयोगी रूपरेखा प्रदान करते हैं, सीखने पर इसके प्रभाव की संयुक्त रूप से जाँच करने के लिए व्यक्तियों, परिवारों, स्कूलों और कार्य स्थानों पर संवाद का उपयोग किया जाता है (सरौंब एवं क्वैडरोस, 2015)। एक स्कूल जो आलोचनात्मक शिक्षण को लागू करता है जिसका प्रमुख उद्देश्य अपने विद्यार्थियों में स्वायत्तता, संवेदनशीलता और आलोचनात्मक सोच को विकसित करना होता है।

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र और स्कूलों की भूमिका

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र, शिक्षण का वह तरीका है जिसका मुख्य उद्देश्य किसी भी प्रकार के सामाजिक उत्पीड़न और उससे संबंधित रिवाज़ों, परंपराओं और विश्वासों को समझना, उन्हें चुनौती देना तथा उसके खिलाफ़ संघर्ष करना है (रावत, 2018)। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र का आधार आलोचनात्मक सिद्धांत है जो विद्यार्थियों को ऐसे सिद्धांत, व्यवहार और ऐसे वातावरण उपलब्ध कराता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चेतना विकसित होती है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र का मुख्य सिद्धांत 1970 और 1980 के दशक के समाजशास्त्रीय सिद्धांत के समालोचना से लिया गया है इसमें यह समझाने की कोशिश की गई है कि स्कूलों ने कैसे विषयों का गठन किया और अर्थ का उत्पादन किया, साथ ही साथ सत्ता और नियंत्रण के मुद्दों से उन्हें कैसे जोड़ा गया। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र विशेष रूप से सामाजिक सिद्धांतों पर आधारित है जिसके अनुसार स्कूल अपनी सामग्री और वैचारिक संसाधनों का उपयोग आवश्यक सामाजिक संबंधों और दृष्टिकोणों को पुन: प्रस्तुत करने के लिए आलोचनात्मक शिक्षा एवं मार्क्सवादी शिक्षा हेतु आवश्यक श्रम के सामाजिक विभाजन को बनाए रखने के लिए करते हैं। स्कूल अनिवार्य रूप से दो कार्य करते हैं— पहला, श्रम शक्ति का उत्पादन और दूसरा, मौजूदा सामाजिक व्यवस्था के रखरखाव हेतु आवश्यक चेतना, स्वभाव और मूल्यों के रूपों का पुनरुत्पादन करना (बोव्लेस एवं गिन्टिस, 1976)। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के अनुसार पत्राचार सिद्धांत शिक्षा को एकतरफ़ा अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण की ओर ले जाता है। उनके पत्राचार सिद्धांत के अनुसार कार्यबल की विशेषता वाले मूल्यों, मानदंडों और कौशल के पदानुक्रमित संरचित प्रतिरूप दैनिक कक्षा में सामाजिक गतिशीलता के रूप में प्रतिबिंबित होते हैं। इसके विपरीत हमें कक्षा-कक्ष की शिक्षा (औपचारिक) और बाहर की शिक्षा (अनौपचारिक) में विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच वाद-विवाद और संवाद संघर्षों के प्रतिफल के रूप में स्कूली ज्ञान के बारे में सोचने के लिए तर्कसंगत रूप से सोचना होगा। ये संघर्ष किसी भी सांस्कृतिक कार्यों और प्रतिक्रियाओं को सीमित कर देते हैं लेकिन वे उन्हें यंत्रवत् रूप से निर्धारित नहीं करते हैं। इसके अलावा आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के अनुसार पाठ्यक्रम केवल आर्थिक ताकतों (पूँजीपति एवं सत्ताधारी वर्ग) के उत्पाद नहीं हैं (एप्पल, 1979)। पाठ्यक्रम का समाजशास्त्र संस्कृति, वर्ग, ज्ञान और स्कूली शिक्षा के अधिकार को जोड़ने का कार्य करता है।

प्राथमिक स्तर पर आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र का शैक्षिक निहितार्थ

अधिकांश अध्यापक यह सोचते हैं कि विद्यार्थियों को उनके रिपोर्ट कार्ड पर अच्छे ग्रेड अर्जित करने में

मदद करने के लिए एक निश्चित समय में कक्षा-कक्ष में विभिन्न रणनीतियों को नियोजित करना आसान नहीं है। हालाँकि, नियमित कक्षा की गतिविधियों के दौरान, अध्यापक उचित योजना के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों में संलग्न कर सकते हैं। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र एक ऐसा शिक्षण दर्शन है जो अध्यापकों की शक्ति और उत्पीड़न की संरचनाओं की आलोचना करने हेतु विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए आमंत्रित करता है। इस प्रकार का प्रोत्साहन विद्यार्थियों में प्राथमिक स्तर से ही प्रारंभ करना चाहिए। इस शिक्षणशास्त्र में सामाजिक स्थिति के बारे में जागरूक होना और उस पर सवाल उठाना शामिल है। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र में अध्यापक अपने स्वयं के ज्ञान का उपयोग विद्यार्थियों के परिवारों, स्कूलों और समाज में मौजूद असमानताओं पर सवाल उठाने और चुनौती देने के लिए, प्रोत्साहित करने के लिए करता है। इस शैक्षिक दर्शन को कुछ लोगों द्वारा प्रगतिशील और यहाँ तक कि कट्टरपंथी भी माना जाता है क्योंकि यह उन संरचनाओं की आलोचना करता है जिन्हें प्रायः हल्के में लिया जाता है। प्राथमिक कक्षा में आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र को व्यावहारिक रूप से लागू करने में निम्न पाँच चरण आपकी मदद कर सकते हैं (लिंच, 2019)—

पहला चरण

अध्यापक स्वयं को चुनौती दें—

यदि अध्यापक आलोचनात्मक और चुनौतीपूर्ण सामाजिक संरचनाओं के बारे में स्वयं नहीं सोच रहे हैं, तो वे अपने विद्यार्थियों से ऐसा करने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं। अध्यापक उन सामग्रियों का उपयोग करके स्वयं को शिक्षित करें जो सामान्य सामाजिक आख्यान पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप एक इतिहास विषय के अध्यापक हैं, तो अध्यापक स्वयं को उन विद्वानों के बारे में पढ़ने और जानने में तल्लीन करें जो समस्याग्रस्त संरचनाओं को चिह्नित करते हैं जिन्होंने कई प्रसिद्ध ऐतिहासिक आँकड़ों एवं शख्सियत को सफल होने दिया या इस बारे में पढ़ें कि उनकी 'सफलताएँ' वास्तव में इतनी सफल क्यों नहीं थीं। जब इसे एक अलग दृष्टिकोण अर्थात् आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र में विचार किया जाता है तो अलग-अलग विचार और संभावनाएँ प्रकट होती हैं। आलोचनात्मक सिद्धांत सभी प्रमुख सामाजिक संरचनाओं और उन आख्यानों को चुनौती देने के बारे में है जिन्हें समाज ने सबसे अधिक परिचित कराया है। जितना अधिक अध्यापक सीखेंगे, उतना अधिक वे अपने विद्यार्थियों को प्रबुद्ध करने में मदद करने के लिए उतने ही बेहतर ढंग से सुसज्जित होंगे जिसकी शुरुआत अध्यापक को प्राथमिक स्तर की कक्षाओं से ही करना चाहिए।

दूसरा चरण

परंपरागत कक्षा को गतिशील कक्षा में बदलें—

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र शक्ति संरचनाओं को चुनौती देने के बारे में है लेकिन एक विद्यार्थी के जीवन में सबसे आम शक्ति गतिशीलता में से एक अध्यापक-विद्यार्थी संबंध है। अध्यापकों के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण एवं एक ठोस तरीका है कि अपनी कक्षा की बैठक व्यवस्था को बदलें। विद्यार्थियों को पंक्तियों में अध्यापक के सामने बैठने के बजाय, डेस्क इस प्रकार सेट करें ताकि वे अर्धवृत्त या सर्कल में एक-दूसरे (विद्यार्थी एवं अन्य विद्यार्थी) के सामने

हो। कक्षा में इस प्रकार की बैठक व्यवस्था बेहतर बातचीत एवं संवाद की अनुमति देता है। अध्यापक खड़े होने के बजाय चर्चाओं का नेतृत्व करते हुए बैठने का भी प्रयास कर सकते हैं। यह आसन आपको विद्यार्थियों के समक्ष समान स्थिति में रखता है और अध्यापक-विद्यार्थी संबंध को मज़बूत और गतिशील बनाता है। यह भी एक अच्छा विचार है, सामान्य तौर पर व्याख्यान-आधारित कक्षा के बजाय एक अध्यापक उदारतापूर्वक विद्यार्थियों को कक्षा में एक चर्चा-आधारित ज्ञान का निर्माण करने का अवसर सृजन करता है जो विद्यार्थियों को गंभीर रूप से सोचने और अपने निष्कर्ष निकालने की अनुमति देता है।

तीसरा चरण

वैकल्पिक विचार प्रस्तुत करें—

चरण 1 में अध्यापक को ऐसे विचारों का सामना करना पड़ा जो प्रमुख आख्यान के विपरीत थे। अब इन विचारों को अध्यापक पारंपरिक विचारों के साथ-साथ अपनी आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र की कक्षा के सामने प्रस्तुत करें। क्या शिक्षक ने दोनों पर चर्चा की और विद्यार्थियों को अपने निष्कर्ष निकालने के लिए प्रोत्साहित किया? यदि कोई विद्यार्थी विषयवस्तु से संबंधित अपना किसी भी प्रकार का विचार प्रस्तुत करता है तो उसे और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें जिससे वह विद्यार्थी आलोचनात्मक चिंतन की ओर अग्रसर हो सके। 'आप ऐसा क्यों मानते हैं?' जैसे प्रश्न पूछना या 'यह एक अच्छी बात क्यों है?', विद्यार्थियों को अपने स्वयं के विश्वासों को चुनौती देने, हानिकारक सामाजिक आख्यानों से मुक्त होने और स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

चौथा चरण

अध्यापक आकलन के तरीके को बदलें—

पारंपरिक मूल्यांकन संरचनाएँ सीमित हो सकती हैं जिसका उपयोग करने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि एक आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र दृष्टिकोण वाले अध्यापक यह सुनिश्चित करें कि आपका आकलन सही उत्तर खोजने के बारे में नहीं हों वरन् आलोचनात्मक चिंतन कौशल के बारे में हों। साथ ही अध्यापक यह भी सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी केवल वही नहीं कर रहे हैं जिससे उन्हें लगता हो कि एक विशेष ग्रेड प्राप्त करने के लिए उन्हें वह करने की आवश्यकता है अर्थात् रटंत प्रणाली को विद्यार्थी ना अपना रहे हों। इसके लिए यह आवश्यक है कि आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को प्राथमिक स्तर की कक्षाओं से लागू किया जाए जिससे विद्यार्थियों में प्रारंभ से ही रट कर याद करने की बजाय तार्किक रूप से सीखने की क्षमता का विकास हो पाए। आप विद्यार्थियों को चर्चा करने और लिखने के लिए प्रोत्साहित करके और प्रस्तुति शैली के ऊपर प्रस्तुत विचारों पर ध्यान केंद्रित करके ऐसा कर सकते हैं।

पाँचवाँ चरण

विद्यार्थी सक्रियता को प्रोत्साहित करें—

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के लिए यह एक चक्रीय प्रकृति है क्योंकि अध्यापक खुद को शिक्षित करने के बाद विद्यार्थियों को आलोचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। विद्यार्थी अपने नए ज्ञान को अपने परिवारों और समुदायों में ले जाते हैं। अध्यापक अपने विद्यार्थियों को उनके समुदाय में अवसरों के बारे में बताकर ऐसा कर सकते हैं जहाँ वे उत्पीड़न का मुकाबला कर सकते हैं, जैसे— आंदोलन, प्रदर्शन,

संगठन आदि। अध्यापक ऐसे क्लब या संगठन शुरू करने में विद्यार्थियों की मदद कर सकते हैं जो हाशिये पर पड़े लोगों की आवाज़ उठाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। आप विद्यार्थियों को उनके परिवार और साथियों के साथ सत्ता और उत्पीड़न के प्रतिरूप के बारे में बात करने के लिए भी प्रोत्साहित कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को अपनाने वाले अध्यापक कुछ अन्य गतिविधियों को अपना कर परंपरागत कक्षा को आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र की कक्षा में बदल सकते हैं। इनमें से कुछ गतिविधियों को नीचे समझाया गया है—

सार्थक अधिगम परिणाम हेतु संवाद करना

अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच तथा विद्यार्थियों और अन्य विद्यार्थियों के मध्य अंत:क्रिया के लिए शिक्षा में संवाद आवश्यक है। 'संवाद, जिसके लिए आलोचनात्मक चिंतन की आवश्यकता होती है, आलोचनात्मक चिंतन उत्पन्न करने में भी सक्षम है। संवाद के बिना, कोई संचार नहीं है और संचार के बिना, कोई सच्ची शिक्षा नहीं हो सकती है'(फ्रेरे, 1970)। संवाद तथ्यों का पता लगाने में सहायक है जिससे संवादकर्ताओं के मध्य घनिष्ठ संबंध स्थापित होता है। संवाद को कक्षा में कुछ पूर्व-आवश्यकताओं की अपेक्षा होती है। सबसे पहले, अध्यापक और विद्यार्थी में एक-दूसरे के लिए प्यार होना चाहिए क्योंकि जब प्यार होता है, तब प्रतिबद्धता होती है। अध्यापक की सकारात्मक मानसिकता विद्यार्थियों को परिलक्षित होनी चाहिए जो यह इंगित करता है कि अध्यापक विद्यार्थी को सीखने में संलग्न करना चाहता है। दूसरी बात, अध्यापक को अपने आप को विद्यार्थियों से ऊपर नहीं समझना चाहिए वरन् उन्हें विद्यार्थियों के साथ संवाद में समान रूप से प्रतिभाग करना चाहिए। अंत में, अध्यापक को विद्यार्थियों पर विश्वास करना चाहिए कि उनका मस्तिष्क खाली बर्तन की तरह नहीं है अपितु उनके पास कुछ ज्ञान है और इस ज्ञान का उपयोग करके, विद्यार्थी संवाद में स्वयं को संलग्न कर और अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

संवाद विद्यार्थियों की शांत प्रकृति और अध्यापक के एकालाप को तोड़ने की एक तकनीक है। प्रेम, मानवता और विश्वास के माध्यम से अध्यापक और विद्यार्थी दोनों एक क्षैतिज रिश्ते में आते हैं और एक पारस्परिक विश्वास का निर्माण करते हैं जो तार्किक परिणाम लाने में मदद करता है (शिह, 2018)। विद्यार्थियों की संलग्नता एवं कक्षा में बातचीत या अंत:क्रिया की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए संवाद एक उत्तम माध्यम है (लाइल, 2008)। विद्यार्थियों के आलोचनात्मक चिंतन क्षमता को बढ़ाने के लिए फ्रेरे ने सुझाव दिया कि संवाद दृष्टिकोण सबसे प्रभावी तरीका है। यह एकालाप को तोड़कर दो-तरफ़ा संचार बनाता है जहाँ विद्यार्थी और अध्यापक सक्रिय भाग लेते हैं। फ्रेरे का संवाद दृष्टिकोण शिक्षण में एक नयी तकनीक नहीं है अपितु 400 ईसा पूर्व में, सुकरात संवाद पद्धति के माध्यम से लोगों को पढ़ाते थे। संवाद एक साहित्यिक गतिविधि है जिसका तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच मौखिक या लिखित रूप में विचारों का आदान-प्रदान होता है।

जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के साथ अधिगम को जोड़ना

फ्रेरे द्वारा दिए गए शिक्षा की बैंकिंग अवधारणा से पता चलता है कि सीखना वास्तविक जीवन की

स्थिति से कितना दूर है। विद्यार्थी केवल वही याद करते हैं जो अध्यापक द्वारा हस्तांतरित किया जाता है। यह संस्मरण किसी विद्यार्थी के जीवन में कोई ठोस अधिगम परिणाम नहीं लाता है। इस संदर्भ में ड्यूई कहते हैं कि एक विद्यार्थी की वास्तविक दुनिया से पाठ्यक्रम और शिक्षा इतनी दूर है कि एक विद्यार्थी की सीखने और उसकी वास्तविक जीवन की स्थिति के बीच कोई संबंध नहीं है। इस तरह से सीखने का विद्यार्थी की आलोचनात्मक चिंतन को बेहतर बनाने में नगण्य प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थियों के आलोचनात्मक चिंतन को जागृत एवं विकसित करने के लिए उसके जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जुड़े हुए क्रियाकलाप कराए जाने चाहिए एवं जीवंत उदाहरण अध्यापक द्वारा प्रस्तुत किए जाने चाहिए। उदाहरणस्वरूप यदि अध्यापक विद्यार्थियों को बेरोज़गारी एवं उसके प्रकार के बारे में बताना चाहता है तो अध्यापक सीधे बेरोज़गारी एवं उसके प्रकार जो पाठ्यपुस्तक में वर्णित है, उसे न बताकर विद्यार्थियों से अपने घर परिवार एवं आसपास के बेरोज़गार लोगों की सूची बनाने एवं बेरोज़गारी के कारण एवं संबंधित जानकारियाँ एकत्रित करने को कहे तत्पश्चात् एकत्रित जानकारी के आधार पर विद्यार्थियों को बेरोज़गारी एवं उसके कारण को समझाते हुए, उसके प्रकार के बारे में विद्यार्थियों के साथ चर्चा करें तो इस प्रकार की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अत्यधिक सार्थक एवं प्रभावशाली होती है।

पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त वास्तविक गतिविधियों से जोड़ना

विद्यार्थियों में आलोचनात्मक जागरूकता सुधार अध्यापक पर निर्भर करता है। अध्यापक विद्यार्थियों की क्षमता के आधार पर पाठ/पाठ योजना अभिकल्पित कर सकते हैं। कक्षा अध्यापक, विद्यार्थियों को अच्छी तरह से जानते हैं जो विद्यार्थियों की आलोचनात्मक जागरूकता को बढ़ाने के लिए कक्षा की रणनीति निर्धारित कर सकते हैं। सीखने के लिए एक स्वतंत्र और निष्पक्ष कक्षा का वातावरण और संवाद आवश्यक है, जहाँ विद्यार्थी किसी भी प्रश्न को पूछने से डरते नहीं हैं। इस तरह का वातावरण विद्यार्थी को एक सक्रिय अधिगमकर्ता बनने में मदद करता है जबकि शिक्षा की बैंकिंग अवधारणा विद्यार्थी को एक निष्क्रिय अधिगमकर्ता बनाती है। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र अध्यापक या विद्यार्थी के द्वारा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में तथ्यों को निष्क्रिय और अकर्मक ढंग से स्वीकार करने की प्रवृति पर प्रश्न चिह्न लगाता है। उदाहरण के लिए, जापान के नागरिकों की औसत आयु 85 वर्ष है जबकि भारत के नागरिकों की औसत आयु 69 वर्ष है (*प्रभात खबर,* 2019)। अब इस तथ्य को क्या अध्यापक निष्क्रिय ढंग से विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे या उपर्युक्त दोनों देशों की औसत आयु में इतना बड़ा अंतर क्यों हैं, इस तथ्य पर आलोचनात्मक रूप से सोचने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करेंगे जिससे उनकी बौद्धिक एवं नैतिक सक्रियता बढ़ेगी। इस प्रकार शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अध्यापक एवं विद्यार्थी को सकर्मक बनाती है।

निष्कर्ष

स्पष्ट है कि आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को लागू करना अलग-अलग विषयों में अलग-अलग दिखाई देगा। जो एक वर्ग या विषयवस्तु के लिए काम करता है वह दूसरे के लिए काम नहीं कर सकता है। उदाहरण के लिए, एक इतिहास विषय के अध्यापक एक ऐसी घटना को चुनौती दे सकते हैं जिसे परंपरागत रूप से

प्रगतिशील माना जाता है जबकि एक साहित्य के अध्यापक एक पुस्तक में पाए जाने वाले सामान्य सांस्कृतिक रूढ़िवाद पर सवाल उठा सकते हैं। दूसरी ओर, एक विज्ञान विषय के अध्यापक, हाशिये पर खड़े समूहों पर वैज्ञानिक खोजों के प्रभाव को देखने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित कर सकते हैं। प्रायः इसमें विषयों के बीच सामान्य बंधनों को खोजना शामिल होगा क्योंकि आलोचनात्मक दृष्टिकोण केवल शिक्षा और संस्कृति के एक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। फ्रेरे ने शिक्षा के पारंपरिक तरीकों को खारिज कर दिया और तत्कालीन शैक्षिक संरचना एवं प्रणाली को बदलने के लिए आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के रूप में एक क्रांतिकारी पद्धति का परिचय दिया। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्रियों का मानना है कि स्कूलों को जाँच और विश्लेषण का एक संभाषण (discourse) देना चाहिए और उन्हें विद्यार्थियों को अपने विकास हेतु आवश्यक मार्ग का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिसे मोटे तौर पर किसी की व्यक्तिगत और सामाजिक कार्य करने के उद्देश्य से बाधाओं और संभावनाओं के बीच संवाद के रूप में समझा जा सकता है। शैक्षिक प्रक्रिया के विषय स्वतंत्र सोच वाले हों, जो स्वतंत्र मानव को ज्ञान और सीखने के बारे में शिक्षित विकल्प बनाने में सक्षम होने चाहिए। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को अपनाना शिक्षण शैली के प्रति सचेत विकल्प के चयन करने से है। यह शिक्षणशास्त्र अन्य शिक्षणशास्त्रों की तरह केवल एक मूक दर्शक नहीं है अपितु यह वस्तुनिष्ठ और मूल्य मुक्त नहीं है, बल्कि व्यक्तिपरक है। बाहर की दुनिया में क्या होता है, इसका कक्षा में क्या प्रभाव पड़ता है और कक्षा में हम जो कुछ भी (हम क्या पढ़ाते हैं, कैसे पढ़ाते हैं, हम किस सामग्री का उपयोग करते हैं, हम विद्यार्थियों का आकलन कैसे करते हैं, हम उन्हें कैसे प्रतिक्रिया देते हैं) करते हैं, उसका व्यापक प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। विद्यार्थी अपने अध्यापकों को उन लोगों के रूप में देखते हैं जो उनके व्यक्तिगत परिस्थितियों के बारे में उनके दृष्टिकोण को सुन सकें, जो आवश्यक रूप से अकादमिक प्रतीत नहीं हो। जब अध्यापक अपने विद्यार्थियों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाते हैं और उन पर भरोसा करते हैं तो जीवन के प्रति दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करने और बदलने की संभावनाएँ खुलती हैं जिससे स्कूली व्यवस्था के निर्माण में योगदान एवं सकारात्मक दृष्टिकोणों और मूल्यों को प्रबलित किया जा सकता है जिसमें अध्यापक द्वारा स्वयं के कार्यों के प्रति आलोचनात्मक और निष्पक्ष विचार अपनाया जा सकता है। परिणामस्वरूप आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र द्वारा उन विषयों का चयन किया जा सकता है जो विद्यार्थियों के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से बहुत मूल्यवान और महत्व रखते हैं। अध्यापकों को अपनी भूमिका के बारे में सोचने की ज़रूरत है क्योंकि अध्यापकों को एक कक्षा को पढ़ाने से परे जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, अध्यापक मार्गदर्शक, सूत्रधार, मध्यस्थता के साथ-साथ श्रोता भी बन सकते हैं जिससे विद्यार्थियों को यह प्रतीत हो कि उनकी आवाज़ें (बातें) सुनी जाती हैं। विद्यार्थियों की बातें अध्यापकों के लिए महत्वपूर्ण हैं और इन सबसे बढ़कर हम अध्यापक और विद्यार्थी ही वह ज़िम्मेदार नागरिक हैं जो हमारे समाज में जिस तरह के लोग बन रहे हैं उनके संबंध में आदर्शों की एक नयी पीढ़ी का निर्माण करना सीख रहे हैं।

संदर्भ

इलियट, डी.जी. 2016. व्हॉट आर द मोस्ट-साईटेड पब्लिकेशन इन द सोशल साइंसेज (अकार्डिंग टू गूगल स्कॉलर)? *इम्पैक्ट ऑफ़ सोशल साइंस*. 16 फ़रवरी, 2022 को http://eprints.lse.ac.uk/66752/ पर देखा गया।

उद्दीन, एम.एस. 2019. क्रिटिकल पेडागॉजी एंड इट्स इम्प्लिकेशन इन द क्लासरूम. *जर्नल ऑफ़ अंडर रेप्रेजेंटेड एंड माइनॉरिटी प्रोग्रेस*. 3(2), पृ. सं. 109–119.

उपाध्याय, आर. 1996. *उत्पीड़ितों का शिक्षाशास्त्र* (अनुवाद संस्करण). ग्रंथ शिल्पी, नयी दिल्ली.

एप्पल, एम. 1979. *आईडियोलोजी एंड कर्रिकुलम*. रूटलेज एंड केगन पॉल, लंदन.

गिरौक्स, एच.ए. 2011. *ऑन क्रिटिकल पेडागॉजी*. पृ. सं. 4. ब्लूम्सबुरी पब्लिशिंग, यूएसए.

ग्रिफ्फिन, इ. 2017. द रोल ऑफ़ क्रिटिकल पेडागॉजी इन प्लेस-बेस्ड एजुकेशन : एन एक्सटेंसिव लिटरेचर रिव्यु. पृ. सं. 6. प्लान बी. प्रोजेक्ट, यूनिवर्सिटी ऑफ़ व्योमिंग.

ग्रोल्लिओस, जी. 2009. *पाउलो फ्रेरे एंड द कर्रिकुलम*. बोल्डर, कोलोराडो : पैराडाइम पब्लिशर्स.

प्रभात खबर. 2019. डिजिटल डेस्क, भारतीयों की औसत उम्र बढ़ी, बिहार के महिला पुरुषों की आयु में अंतर नहीं. 10 सितंबर. 6 मई, 2021 को https://www.prabhatkhabar.com/national/1327374 पर देखा गया है।

फ्रेरे, पी. 1970. *पेडागॉजी ऑफ़ द ओप्प्रेस्सेड*. पृ. सं. 70–73. कोन्टीनूम, न्यूयॉर्क.

———. 2001. *पेडागॉजी ऑफ़ द फ्रीडम : एथिक्स, डेमोक्रेसी एंड सिविक्स करेज*. रोवमन एंड लिट्टिलफिल्ड पब्लिशर, मेरीलैंड.

व्यल्ली, जे. 2012. रिव्यु ऑफ़ पाउलो फ्रेरेज पेडागोजी ऑफ़ द ओप्प्रेस्सेड. *द न्यू आब्जर्वर*. 16 फ़रवरी, 2022. को https://thenewobserver.co.uk/2012/06/07/review-of-paulo-freires-pedagogy-of-theoppressed-2/ पर देखा गया।

बोव्लेस, एस. और एच. गिन्टिस. 1976. *स्कूलिंग इन कैपिटलिस्ट अमेरिका : एजुकेशनल रिफ़ार्म एंड द कंट्राडिक्शन ऑफ़ इकोनॉमिक्स लाइफ़*. बेसिक बुक्स, न्यूयॉर्क.

ब्राउन, सी. 1987. *लिटरेसी इन 30 आवर्स : पाउलो फ्रेरेस प्रोसेस इन नार्थ ईस्ट ब्राज़ील*.

ब्रूकफ़ील्ड, एस. 1995. द गेटिंग ऑफ़ विज़डम : व्हॉट क्रिटिकली रीफ़्लेक्टिव टीचिंग इज एंड व्हाई इट्स इम्पोर्टेन्ट. *बिकम ए क्रिटिकली रीफ़्लेक्टिव टीचर*. पृ. सं. 1–28.

बर्मानिया, एस. 2011. व्हाई पाउलो फ्रेरेज पेडागोजी ऑफ़ द ओप्प्रेस्सेड इस जस्ट ऐज रिलेवेंट टुडे ऐज एवर, द इंडिपेंडेंट ब्लोग्स. द इंडिपेंडेंट. लंदन. 16 फ़रवरी, 2022 को https://web.archive.org/web/20120430215016/http://blogs.independent.co.uk/2011/10/26/why-paulo-freires-pedagogy-of-the-oppressed-is-just-as-relevant-today-as-ever/ पर देखा गया।

रावत, बी.सी. 2018. भाषा-शिक्षण में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र की उपयोगिता. *परिप्रेक्ष्य : शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक-आर्थिक संदर्भ*. 25(2). पृ. सं. 53–68. नीपा, नयी दिल्ली.

लाइल, एस. 2008. डायलॉगिक टीचिंग : डिस्कसिंग थ्योरेटिकल कॉन्टेक्स्टस एंड रिव्यूइंग एविडेंस फ्रॉम क्लासरूम प्रैक्टिसेज. *लैंग्वेज एंड एजुकेशन*. 22(3). पृ. सं. 22–240.

लिंच, एम. 2019. हाऊ टू इम्प्लीमेंट क्रिटिकल पेडागोजी इनटू योर क्लासरूम. *द एडवोकेट*. 17 फ़रवरी, 2022 को https://www.theedadvocate.org/how-to-implement-critical-pedagogy-into-your-classroom/ पर देखा गया।

शिह, वाई.एच. 2018. सम क्रिटिकल थिंकिंग ऑन पाउलो फ्रेरेस क्रिटिकल पेडागॉजी एंड इट्स इम्प्लीकेशंस, *इंटरनेशनल एजुकेशनल स्टडीज़.* 11(9). पृ. सं. 64–70.

सरौब, एल.के. और एस. क्वैडरोस. 2015. क्रिटिकल पेडागॉजी इन क्लासरूम डिस्कोर्स. पृ. सं. 252–260. फ़ैकल्टी पब्लिकेशंस, डिपार्टमेंट ऑफ़ टीचिंग, लर्निंग एंड टीचर एजुकेशन.

17 फ़रवरी, 2022 को http://juliapicchiottino.weebly.com/scholarship पर देखा गया। (चित्र लिंक)